समकालीन कलाकार सन्तोष वर्मा का जीवन प्रमुख कलाकार्यों का अध्ययन

पवनेन्द्र कुमार तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
एन.बी.एस.एफ.एफ.
स्वामी विवेकानन्द, सुभारती
विश्वविद्यालय, मेरठ

सन्तोश वर्मा ने अपने चित्रों में आम आदमी की सोच का आधुनिक एवं सशक्त प्रकार से प्रस्तुत किया है। इनकी चिन्ता की कृतियां इनके चेतन मन को जैसे दर्शाती हैं। सन्तोश वर्मा के चित्रों को देखने से लगता है कि, इनका जीवन चित्र के साथ कैसे बहता जा रहा है। उनके चित्र जो की भौगोलिक आकार जैसे प्रतीत होते हैं, बल्कि अध्यात्मिक एवं दार्शनिक कृतियां प्रतीत होती है। जिन्होंने उनकी बदलती हुई आकृतियों में रंगो के प्रयोग से भू–मण्डलीय कारण को दिखाया है। उन्होंने अपने चित्रों में व्यवहार और सोच दानों को दर्शाया है।

संतोश वर्मा भारत के ऐसे कलाकार हैं जिनके, चित्र को देखने से पूर्व अमेरिकी प्रभाव के साथ–साथ संसारिक भूमण्डलीकरण को देखा जा सकता है। इनके बदलती सामाजिक स्थितियों, सम्बन्ध, भावनायें, आदि को देखा जा सकता है। इन्होंने आज की पीढ़ी के लोगों की मानसिक सोच व विचार को दर्शाया है। जिस तरह एक पतंगबाज एक पतंग को उड़ाता है। उसकी पतंग ऊँचाई को छूती है लेकिन पतंग की डोरी अपने हाथों मे पकड़े रहते हैं। सन्तोश वर्मा के चित्रों में भारत के आधुनिक चित्र साहित्य समाजिक ज्ञान के सम्बन्धों को सत्य के साथ चित्रित किया गया है। इनके चित्रों में आधुनिक और समकालीन को एक चुनौती के साथ दर्शाया है। इन्होंने मनुष्य और उसकी प्रकृति को सृजनात्मकता से दर्शाया है।

सन्तोश वर्मा के आन्तरिक अनुभूति का मूर्त रूप– जीवन की खुशियाँ उकेरते सन्तोश वर्मा–

कॉलेज आफॅ आर्ट में भी सन्तोश अपने गुरूजनों के प्रिय रहे। प्रोफेसर ए0 पी0 गज्जर सन्तोश के काम पर फिदा थे। वह उन्हें कॉलेज के अलावा भी काम दिलवाते रहते थे। सन्तोश ने बताया कि कॉलेज में ज्यादा तवज्जों मिलने से वह ओवर कान्फिडेन्ट हो गए पर बाद में उन्हें इसका खामियाजा भी उठाना पड़ा। अपने जीवन के उतार– चढ़ाव से सन्तोश ने खासा सबक सीखा। आर्ट कॉलेज में ही उन्हें उनकी जीवन साथी भयामोश्री मिली। वह उनके साथ पढ़ती थी। उनमें गहरी बनने लगी। धीरे–धीरे दोनों मे नजदीकियां बढ़ी और दिल्ली में उस प्रका ान संस्थान मे नौकरी के दौरान श्यामा मोश्री और सन्तोश की भाादी हो गईं। श्यामोश्री की प्रेरणा पर ही सन्तोश ने बनारस से बाहर जाने का फैसला किया था। दरअसल भयामोश्री के पिता कलाकार थे। वह लखनऊ आर्ट कॉलेज के प्रोफेसर थे। इसलिए वह कला की दुनिया के बारे मे वह खूब जानकारी रखती थी। वह जानती थी कि सन्तोश जैसे कलाकार की मन्जिल कहां है।

सन्तोश जब 1983 में दिल्ली पहुंचे तो अस्तित्व का सवाल खड़ा हो गया। रहने की जगह से लेकर पेट की आग बुझाने तक को समस्या थी। लिहाजा लेआउट कलाकार के तौर पर नौकरी करनी पड़ी। सन्घर्ष के उस दौर में दिल्ली के मशहूर फ्रीलान्स चित्रकार स्वर्गीय करूणानिधान ने उन्हे रहने का आसरा दिया। अनिल करन्जई के घर पर भी वह रहे थे। ये दोनों ही बनारस के रहने वाले थे। और इस महानगर के चाल–चलन समझाकर काम के लिए प्रेरित करने में उनका खासा योगदान रहा। सन्तोश ने पेट्रियट की लिन्क पत्रिका में भी काम किया था। यहां वह सईद नकवी, जफर आगा और जॉन दयाल जैसे पत्रकारों के सम्पर्क में आए। पत्रकारों से मेलजोल सन्तोश को पसन्द था। पढ़ने में उनकी गहरी दिलचस्पी है। राहुल सांस्कृत्यायन की ' वोल्गा से गंगा तक ' वह स्कूलों जीवन में ही पढ़ गए थे। मनुष्य विकास का नतीजा है, यह बात उन्होंने उसी से आत्मसात् की । सांस्कृत्यायन के प्रभाव ने ही उन्हें नास्तिक बनाया। वरना पहले तो वह घोर आस्तिक थे। तुलसीदास की चौपाई से उनकी नीन्द टूटती सन्तोश बड़े चाव से फिल्म देखते है। उनकी फिल्म बनाने की बड़ी इच्छा है। पर इसके लिए तकनीकी ज्ञान चाहिए, साधन चाहिए। वह कहते है कि सोचता हूं छोटी फिल्में बनाऊँ। अनुराग कश्यप और अयान मुखर्जी उनके पसन्दीदा निर्देशक है। श्याम बेनेगल के वह प्रशंसक है। अन्कुर जैसी फिल्में सन्तोश को अपने देहाती जीवन की याद दिलाती है। इसी तरह महान फिल्मकार सत्यजीत राय की ' पाथेर पान्चाली ' की कहानी तो बिल्कुल उनके जीवन के करीब है। वह कहते है कि वह भी इस फिल्म के बाल पात्रों की तरह रेल देखने जाते थे। पटरी पर कान लगाकर आवाज सुनते थे। वह बांग्ला भाषी है। इसलिए थिएटर के शौकीन भी है। साहित्य में गहरी दिलचस्पी है। पर आजकल पढ़ने का समय नहीं निकाल पाते है। अनूदित साहित्य खूब पढ़ा है। वह बताते है। कि महादेवी वर्मा की जिस किताब का ज्ञानपीठ सम्मान मिला था। उसका कवर उन्होंने ही बनाया था। वह यह कहते हुए उनकी आंखों में चमक आ जीती है। राजेन्द्र यादव की ' कांटो की बात ' का कवर पेज भी सन्तोश ने ही तैयार किया था। वह साहित्य और चित्रकारी को एक जैसी कला मानते है। उनका कहना है कि बस माध्यम का फर्क है।

वह कहते है कि कला की दुनिया में बाजार की भूमिका को सिरे

से खारिज नहीं किया जा सकता है। आज अगर पेन्टिंग खरीदना अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतरीन पूंजी निवेश है तो इससे कलाकारों की भी साख बढ़ी हैं और माली में सुधार हुआ हैं । पर वह इस बात के हामी नहीं है कि बाजार की कल्पना को प्रभावित करे। उनकी राय में आदर्श स्थिति यह है कि आप जो बनाएं उसे बाजार मिले पर बाजार यह बताने लगे कि आपके क्या बनाना है। तो यह कला का पतन होगा। बाजार आपको तलाशे या आप खुद बाजार तक पहुचने पर बाजार की अहमियत तो है ही। वह बताते है कि बाजार बिसमिल्ला खाँ तक पहुचा था। और पन्डित रवि शंकर ने बाजार की नब्ज समझकर खुद को उस हिसाब से तैयार किया था।

देशी पत्रिकाओं में आर्ट पर काम लिखा जा रहा है। बल्कि एक तरह से यह चलन खत्म ही हो चला है। आज कल थ्री पार्टियों का दौर है। जिसमें आर्ट गैलरी में फलाँ मौजूद था। उसकी तस्वीरें छपती है। कला पक्ष की कहीं कोई चर्चा नहीं दिखती है। कलाकारों के मेल– जोल और बैठको का दौर खत्म हो चला जा रहा है। कला समीक्षक अब आर्ट समझने के लिए कलाकारों के साथ बैठते ही नहीं है। अब ब्रोशर के आधार पर समीक्षा होती है, लोग प्रदर्शनी भी नहीं देखते है।

पेन्टिंग ही नहीं कला के हर पहलू को लेकर संस्थानों में उदासीनता है। सरकार ने कला को प्रोत्साहन के लिए नाममात्र का बजट रखा है। देश में म्यूजियम और कला दीर्घाओ की खासी कमी है। आर्ट कॉलेज भी गिने– चुने है।

और बच्चो को मजबूरी में उन प्राइवेट कॉलेजों में दाखिला लेना पड़ता है। जहां मोटी फीस के बावजूद सन्साधन नहीं है। आर्ट की पढ़ाई धन्धा बन गया है। कलाकार को मांजने और बढ़ाने की जिम्मेदारी पढ़ाने वालों की है। पर समर्पित शिक्षक अब है कहां ? समर्पित लोगों के सामने पेट की आग बुझाने का संकट है। कुल मिलाकर कला की शिक्षा के क्षेत्र में भी विकट स्थिति है।

सन्तोश वर्मा एक उज्जवल उदाहरण हैं जो किसी चीज को अपनी पसन्द की हद तक पाने की कोशिश करते हैं व माता–पिता को अपने बच्चों के रूचि वाले कार्य करने देते हैं। बच्चों को स्वतन्त्रता है कि, वे जिसमें रूचि रखते हैं वही पढ़ें। पिछले कुछ वर्षों से वह दिल्ली के निवासी बने हुए हैं। आज वह गाजीयाबाद के इन्दिरापुरम में रहते है।

संतोश वर्मा बहुत ही साधारण व्यक्ति हैं जिनका व्यक्तित्व अपने आप में अनोखा है। उन्होंने कला के क्षेत्र में काफी बड़े पुरस्कार प्राप्त किये हैं। इसी के साथ–साथ उन्होंने नाम ग्रामी नेशनल अकादमी पुरस्कार, आई फेक्स, सोसाइटी पुरस्कार, यू0 पी0 स्टेट पुरस्कार जीते हैं, हाल ही में उन्होंने एकल प्रदर्शनी (1.) ग्रुप प्रदर्शनी की है। उनके चित्र भारत की बड़ी गैलरियों में लगे हैं। जैसे– न0गै0मॉ0आ0 दिल्ली भारत भवन, भोपाल और ललित कला अकादमी और बहुत से चित्र उनके अपने संग्रह यु0 के0, यु0 एस0 ए0, होलैण्ड और स्वीज़रलैण्ड जैसे देशों में सन्ग्रहित हैं। उन्होंने दृश्य चित्रण की बजाय स्टिल लाइफ और मॉडलिंग को अपने अमूर्त रूप में एक्रेलिक रंगों से चित्रत किया है।

उनका कहना है कि, 'चित्रकला मेरा जीवन और आत्मा' और मेरा सम्पूर्ण जीवन इसको समर्पित है। इतना की सोते समय भी मुझे चित्रकला ही ध्यान में आती है। परन्तु इतनी दूर की यात्रा सरल नहीं थी। पथ में बहुत से कठिनाईयां आयीं। उनका जन्म 1956 में भाटी गांव में हुआ था। वे 14 साल की उम्र में वाराणसी पहुंचे क्योंकि, उनके अन्दर का कलाकार बचपन से ही बाहर आना चाहता था। जबकि वे कोहबर, एक प्रकार की रंगोली, भाादी–विवाह के कार्यक्रमों में बनाया करते थे।

उनका कहना है कि, मुझे अलग–अलग प्रकार के चित्र बनाने और रंग भरना बहुत अच्छा लगता था। परन्तु उस समय कला का महत्व या लोकप्रियता समाज में इतनी नहीं थी। उन्होंने कहा माता–पिता बच्चों के भविश्य को लेकर बहुत चिंतित रहते थे। और उनके लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के स्थानों पर उनका भविष्य देखते थे। उन्होंने कहा परिणाम स्वरूप संतोश वर्मा का बचपन कठनाईयों से भरा रहा है। पहले वे एक छोटे से गांव से उठकर एक बड़े शहर में आए। पढ़ाई में उनका अधिक रुझान नहीं था। और कला में उनके भविष्य को उनके बड़ों ने स्वीकृति नहीं दी। इसके पश्चात् उनके पिता जी ने आर्ट कॉलेज में दाखिला दिलवाया और इसी कार्य को करने का मेरा निर्णय था। मेरा एक मात्र सपना आर्ट कॉलेज में दाखिला लेना था।